मुंबई पोर्ट ट्रस्ट

अपना पोर्ट

जुलाई-सितंबर 2021

संपादक : श्री. यू. आर. मोहन राजू, सचिव
उप संपादक : श्री. मंदार पारकर, उप सचिव
श्री. पवन भारती, हिंदी अधिकारी
परिकल्पना एंव डिझाईन : श्री. राजन लाड

नियुक्ति

श्री. राजीव जलोटा (भा.प्र.से.) अध्यक्ष, मुं.पो.ट्र.

श्री. राजीव जलोटा, भा.प्र.से.:1988: महाराष्ट्र, ने 04.11.2020 को अध्यक्ष, मुंबई पोर्ट ट्रस्ट का प्रभार ग्रहण किया.

श्री. राजीव जलोटा ने लखनऊ विश्व विद्यालय से रसायन विज्ञान में (एम.एस.) स्नातोकोत्तर विज्ञान में विशारद किया है. उन्होंने 1988 में भारतीय प्रशासनिक सेवा आरंभ की. सेवा के दौरान उन्होंने ड्युक विश्व विद्यालय, यूएसए से अंतर्राष्ट्रीय विकास नीति में अपनी मास्टर्स उपाधि हासिल की. यूएसए से लौटने के बाद, श्री. जलोटा ने सिकॉम, महाराष्ट्र के प्रबंध निदेशक के रुप में काम किया, इसके बाद महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महा मंडल (एमआईडीसी) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रुप में तीन साल का कार्यकाल पूरा किया. फिर उन्होंने 2011 में बृहन्मुंबई महानगर पालिका में अतिरिक्त मनपा आयुक्त (परियोजना) का कार्यभार सम्हालने से पहले महाराष्ट्र राज्य के रोजगार और स्व रोजगार आयुक्त के रुप में काम किया. महानगर पालिका में वह वित्त और बजट, जल आपूर्ति और मल निस्सारण प्रबंधन, मूल्यांकन और संग्रह विभाग के प्रभारी थे.

मुंबई में उनके कार्यकाल के दौरान प्रॉपर्टी टैक्स में कॅपिटल वैल्यू सिस्टम प्रस्तुत किया गया था. उन्होंने जनवरी 2015 में महाराष्ट्र के बिक्री कर आयुक्त के रुप में प्रभार ग्रहण किया, और तीन साल से अधिक समय के लिए जीएसटी के कानून और नीति बनाने की प्रक्रिया का हिस्सा रहें हैं. उन्होंने महाराष्ट्र राज्य के लिए जीएसटी लागू किया.

मुंपोट्र के साथ जुडने से पहले, वे महाराष्ट्र के अतिरिक्त मुख्य सचिव, उच्च तथा तकनीकी शिक्षण के पद पर कार्यरत थे.

श्री. उन्मेश शरद वाघ (भा.रा.से.) उपाध्यक्ष, मुं.पो.ट्र.

श्री उन्मेश वाघ भारतीय राजस्व सेवा में केंद्रीय उत्पाद शुल्क, जलगांव, महाराष्ट्र के सहायक आयुक्त के रुप में 2002 में शामिल हुए उन्होंने वर्ष 2002 से 2004 के दौरान पद सम्हाला. भा.रा.से. में शामिल होने के पहले, उन्होंने महाराष्ट्र सरकार में तहसीलदार और सहायक समादेशक, रेल्वे सुरक्षा बल के रुप में काम किया. उन्होंने सीओईपी पुणे से बीई (मैकेनिकल) तथा युनिवर्सिटी डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट सायन्स (पुम्बा) युनिवर्सिटी से एमबीए (मटेरियल्स) और एमबीए (फाईनान्स) किया है.

डीआरआई अहमदाबाद में उप निदेशक और अतिरिक्त निदेशक के पद पर कार्य करने के कारण उन्हें खुफिया जानकारी इकठ्ठा एकत्र करने और वाणिज्यिक धोखाधड़ी के विभिन्न मामलों के साथ साथ सीमा शुल्क की चोरी और साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में तस्करी गतिविधियों का पता लगाने का अनुभव है. उन्होंने वित्त मंत्रालय में अवर सचिव कर अनुसंधान यूनिट (टीआरयू) और उत्पाद शुल्क निदेशक के रुप में काम किया है. उन्होंने दिल्ली में सूचना प्राद्योगिक (आईटी) और संचार, गृह और कोयला मंत्रालय में प्रतिनियुक्ति पर भी काम किया है. उन्होंने अतिरिक्त आयुक्त सीजीएसटी (वडोदरा) के रुप में काम किया है. वर्तमान नियुक्ति के पहले अतिरिक्त आयुक्त सीजीएसटी (वडोदरा) के रुप में काम कर चुके है.

उन्हें नीति गठन के क्षेत्र में, राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दों और कराधान और कानूनी मुद्दों के संबंध में खुफिया जानकारी एकत्र करने का प्रदीर्घ अनुभव रहा है.

मराठी भाषा दिवस-2021

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट प्रशासनाच्या वतीने 'मराठी भाषा संवर्धन पंधरवडा' आणि 'मराठी भाषा गौरव दिन' मोठ्या उत्साहात साजरा

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट प्रशासनच्या वतीने सामान्य प्रशासन विभाग, कल्याण प्रभागाच्या सहयोगाने 'मराठी भाषा संवर्धन पंधरवडा' दि. 14 ते 28 जानेवारी 2021 या कालावधीत मोठ्या उत्साहात साजरा करण्यात आला. या निमित्त कथाकथन स्पर्धा, स्वरचित काव्यवाचन स्पर्धा, एकपात्री अभिनय स्पर्धा, निबंध स्पर्धाचे आयोजन करण्यात आले. या सर्व स्पर्धांना, स्पर्धकांचा उदंड प्रतिसाद लाभला. या स्पर्धेनिमित्त ज्येष्ठ अभिनेते व दिग्दर्शक श्री. प्रमोद पवार, ज्येष्ठ कवी अरुण म्हात्रे, प्रसिध्द अभिनेते श्री. पंढीरीनाथ कांबळे उर्फ पॅडी, ज्येष्ठ पत्रकार श्री. मंगेश विश्वासराव यांचे परीक्षण व मार्गदर्शन लाभले.

तसेच दि. 12 फेब्रुवारी ते 02 मार्च 2021 या कालावधीत 'मराठी भाषा गौरव दिन' मोठ्या उत्साहात साजरा करण्यात आला. त्यानिमित्त अनुवाद स्पर्धा, गायन स्पर्धा, रांगोळी स्पर्धा, पुस्तक प्रदर्शन व पुस्तकांची सवलीतीच्या दरात विक्री असे कार्यक्रम आयोजित करण्यात आले. रांगोळी स्पर्धेतील स्पर्धकांना सिध्देश बागवे आणि गायन स्पर्धेतील स्पर्धकांना गझल नवाज पंडित भिमराव पांचाळे यांचे परीक्षण व मार्गदर्शन लाभले. तसेच दि. 2 मार्च 2021 रोजी झालेल्या पारितोषिक वितरण समारंभाला आंतरराष्ट्रीय पुरस्काराने सन्मानित झालेल्या ज्येष्ठ अभिनेत्री श्रीमती रोहिणी हट्टंगडी यांच्या हस्ते सर्व विजेत्यांना सन्मानीत करण्यात आले. 'मराठी भाषा गौरव दिन' या कार्यक्रमाचा सांगता समारोह मोठ्या उत्साहात साजरा करण्यात आला.

कोविड–19 चा प्रादुर्भाव व त्यामुळे आलेले निर्बंध याचा विचार करुन आयोजित केलेले सर्व कार्यक्रम,स्पर्धा ऑनलाईन पध्दतीने घेण्यात आल्या. त्यासाठी खास फेसबुक–पेज तयार करण्यात आले व त्याद्वारे सर्व स्पर्धकांनी तसेच प्रेक्षकांनी व श्रोत्यांनी, सर्व स्पर्धांचा मनमुराद आंनद घेतला. *https://www.facebook.com/groups/455363269161232* या फेसबुक पेजवर आजही कोणीही त्याचा रसास्वाद घेऊ शकतात.

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट चे वरिष्ठ उप प्रबंधक, श्री मिलिंद कुलकर्णी, उप प्रबंधक, श्री. रुफी कुरेशी, तसेच स्थानीय लोकाधिकार समितीचे अध्यक्ष, श्री. मिलिंद घनकुटकर यांची प्रमुख उपस्थिती व मार्गदर्शन सर्व उपस्थितांना लाभले. मुंबई पोर्ट ट्रस्ट चे विश्वस्त सुधाकर अपराज यांनी देखील कार्यक्रमाला हजेरी लावली. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी स्थानीय लोकाधिकार समितीच्या पदाधिकाऱ्यांचे विशेष सहकार्य लाभले. तसेच श्री. प्रविण शिंदे, सौ. कल्पना कुलकर्णी, श्री. प्रमोद दळवी, आणि श्री. विजय सोमा सावंत यांनी विशेष परिश्रम घेतले.

5. या कार्यक्रमास मुंबई पोर्ट ट्रस्ट चे अध्यक्ष, श्री राजीव जलोटा, उपाध्यक्ष, श्री उन्मेश वाघ तसेच सचिव (प्रभारी), श्री गिरीराज राठोड यांच्या मार्गदर्शन व सहकार्याने सदर कार्यक्रम यशस्वीपणे संपन्न झाला.

हिन्दी सप्ताह - 2020

हिंदी दिवस अर्थात 14 सितंबर के अवसर पर देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है. मुंबई पोर्ट ट्रस्ट में भी इस वर्ष हिंदी सप्ताह–2020 का आयोजन किया गया. हिन्दी दिवस के अवसर पर गत वर्षों के भाँति इस वर्ष भी अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया. मुंबई पत्तन न्यास, के तत्कालीन अध्यक्ष श्री. संजय सेठी, उपाध्यक्ष श्री उन्मेष शरद वाघ और श्री राजेंद्र पैबीर, सचिव एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी दिवस की शुभकामानाएं दी और अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने के लिए प्रेरित किया. कोविड–19 महामारी के कारण इस वर्ष कर्मचारियों में हिंदी कामकाज के प्रति रुचि उत्पन्न हो और हिंदी का प्रचार प्रसार हो इस उद्देश्य से सप्ताह के दौरान विविध स्पर्धाओं का आयोजन **ऑन लाईन** किया गया सप्ताह के दौरान हिंदी में निबंध, कहानी लेखन, तथा स्वरचित कविताओं को कर्मचारियों द्वारा ऑन लाईन मंगवाया गया जिसमें बड़ी संख्या में अधिकारियों और कर्मचारियों ने सहभाग लिया. सप्ताह के प्रथम दिन श्री. मनसुख मांडविया, राज्यमंत्री, पोत परिवहन एवं रसायन उर्वरक द्वारा प्राप्त संदेश हर विभाग में पढा गया.

सप्ताह के अवधि में ज्यादातर मुंपोट्र इन्ट्रानेट, इंटरनेट और व्हॉटस्ऍप का प्रयोग किया गया ताकी इस महामारी में शारीरिक संपर्क कम बने लेकिन हिंदी के प्रचार प्रसार में कोई बाधा नां आये. निर्धारित विषयों को केंद्र में रखकर प्रतियोगियों ने निबंध, कहानी और स्वरचित कविताएँ लिखकर ऑन लाईन प्रेषित किये. कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए श्री. पवन भारती, हिंदी अधिकारी ने सभी अधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापित किया. कार्यक्रम में सामान्य प्रशासन विभाग में वरिष्ठ उप सचिव श्री. राठोड, वरिष्ठ उप सचिव श्रीमती पटवर्धन, उप सचिव श्री. शेणॉय, उप सचिव श्री. पारकर, उप सचिव श्री. आफळे आदि ने उत्साहवर्धन किया. हिंदी अधिकारी श्री. पवन भारती ने सप्ताह के सफल आयोजन के लिए कर्मचारी एवं अधिकारियों के प्रति आभार प्रकट किया और इसी तरह हिंदी सप्ताह का समापन किया गया.

हिंदी सप्ताह के दौरान निम्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया.

1. दिनांक 14 सोमवार

हिन्दी दिवस संदेशों का इन्ट्रानेट डिजिटल प्रसारण तथा हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ संपर्काधिकारियों द्वारा कर्मचारियों में प्रसारण.

2. दिनांक 15 मंगलवार

हिन्दी अधिकारी तथा संपर्काधिकारियों द्वारा विभागों का निरीक्षण.

3. दिनांक 16 बुधवार

ऑन लाईन हिन्दी निबंध प्रतियोगिता.

विषय : 1. आत्मनिर्भर भारत 2. आपदा में अवसर

3. कोरोनाः वैश्विक महामारी 4. हिन्दी की आवश्यकता

4. दिनांक 17 गुरुवार

हिन्दी अधिकारी तथा संपर्काधिकारियों द्वारा विभागों का निरीक्षण.

5. दिनांक 18 शुक्रवार

ऑन लाईन हिन्दी स्वरचित कविता प्रतियोगिता.

6. दिनांक 19 शनिवार

ऑन लाईन हिन्दी स्वरचित कहानी प्रतियोगिता.

हिंदी सप्ताह 2020 के दौरान आयोजित निबंध स्पर्धा में प्रथम पुरस्कार प्राप्त

कोरोना एक वैश्विक माहामारी

जिगर चौधरी, अभियांत्रिकी विभाग

कोरोना विषाणु या एन कोरोना वायरस एक प्राणिजण्य आरएनए विषाणु हैं जिसकी शुरुवात लगभग नवंबर–दिसंबर से हुई. यह विषाणु जानवरों से आया है इस विषाणु का फैलाव चीन के वुहान शहर के केंद्र में स्थित हुबोई प्रांत के सी फुड मार्केट से हुआ है. ऐसा अंदाज लगाया जाता है. लोग जो जिवित या वध किये गए जानवरों का मांस को बेचते थे जो इस विषाणु से संक्रमित थे.

विश्व स्वास्थ संगठन ने इसका नाम सार्स कोविड 2 रखा है. इसे कोविड 19 कोरोना वायरस डिसिज 19 भी कहा जाता है. कोरोना अर्थ लॅटिन भाषा में "मुकुट" होता है और इस विषाणु के कणों के इर्द–गिर्द उभरे हुए कांटे जैसे ढाँचो से इलेक्ट्रॉन सुक्ष्मदर्शी में मुकुट जैसा आकार दिखता है जिस पर इसका नाम रखा गया हैं.

विश्व स्वास्थ संगठन के अनुसार महामारी से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है जिससे कोई भी बिमारी अपेक्षा से अधिक प्रसारित हो जाती है तथा उसकी कोई स्पष्ट इलाज भी प्राप्त नहीं हुआ है. इसका प्रसार लगभग सभी देशों में हो चुका है इसीलिए इसे विश्व स्वास्थ संगठन द्वारा वैश्विक महामारी घोषित किया गया है.

भारत में भी कोरोना विषाणु के बढते प्रभावों के कारण "महामारी अधिनियम 1897" को लागु किया गया है. ताकि स्थानीय स्तर पर सुचनाओं को स्वैच्छिक रुप से लागु किया जाए. भारत में इस विषाणु के कारण केरल राज्य ने सबसे पहले "राज्य आपत्ती" घोषीत किया. इस विषाणु का प्रकोप रोखने के लिए सरकार द्वारा कई उपाय योजनाए किये गये जैसे की विद्यालयों तथा सिनेमाघरों को बंद किया गया पर्यटन स्थलों पर पाबंदी लगायी गयी. भीड में जाने को लोगों को रोका गया ताकि विषाणु का प्रसार ना हो.

इस विषाणु से बचने के लिए लोगों को घर में ही रहने की सलाह सरकार द्वार दी गयी, और लोग घर के बाहर न निकले इसलिए भारत में धारा 144 लागू कर दी गई. धारा 144 लागू होने के बाद चार या उससे ज्यादा लोगों को एक जगह एकत्रित होने पर रोक लगा देती है. साथ–साथ इसका उल्लंघन ना हो इसलिए जनता कर्फ्यु और लॉकडाउन भी लगाया गया ताकि कोरोना विषाणु का प्रकोप रोका जाए. इसके अलावा हात स्वच्छ रखें और मुहं और नाक को न छुने की सलाह भी दी गयी.

सभी स्वच्छता के लिए हॅण्ड सॅनिटायजर का इस्तेमाल करे और लोगों से कुछ दूरी बनाये रखें ये उपाय योजित किये गये. घर से बाहर निकलते समय मुखपट्टी का प्रयोग करे. कोरोना विषाणु संबंधित लक्षणों जैसे जुखाम साँस लेने की दिक्कत होना आदि के बारें में कुछ परेशानी हो तो तुरंत नजदीक के अस्पताल में जाने की सलाह भी दी गयी.

कोरोना विषाणु के प्रभाव रोकने के सरकार की तरफ से लॉकडाउन लगाए गये. उससे भारतीय अर्थव्यवस्था और कई देशों की अर्थव्यवस्था में भारी गिरावट आने लगी. कोरोना महामारी के कारण बहुसंख्य लोग बेरोजगार हो गये उसके कारण आनेवाली भूखमारी से बचने के लिए और कोरोना के डर के कारण लोगों में "रिवर्स माइग्रेशन" शहरों से गावों की तरफ जाने लगे जिसके कारण उनपर निर्भर औद्योगिक व्यवसाय पुरी तरह से बंद होने लगे. उसका असर अर्थव्यवस्था पर भारी मात्रा में हुआ.

कोरोना विषाणु के कारण हवाई सेवा बंद हो गई उससे हवाई व्यवसाय पर भी भारी मात्रा में नुकसान हुआ. सभी विमान हवाई अड्डा पे रुक जाने के कारण भी बहुत सारे लोगों ने अपना रोजगार खोया. इसके कारण पर्यटन क्षेत्रों को भी असर हुआ. सभी देशों में अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए नये तौर तरिके अपनाने लगे.

सरकार की तरफ से राहात पैकेज लोगो को दिया गया जिससे लोगो को इस महामारी में सहारा मिले. कोरोना महामारी ने विश्व में हाहकार मचाकर लगभग दस लाख लोगों को अपनी जान गवाई पडी. इस महामारी में डॉक्टर लोग बेहतरीन काम कर रहें है लेकीन हर दिन नए मामले सामने आने के कारण उन्हें बडी समस्याओं से जुझना पड रहा है.

कोरोना महामारी पे अभी तक कोई भी इलाज न होने के कारण सभी देशों की फार्मा औद्योगिक क्षेत्र टिके की संशोधन में लगी है. ताकि इस वैश्विक कोरोना महामारी पे जीत हासिल कर सके. अभी टिकेकरण ही सबसे आखरी उपाय है. इस वैश्विक महामारी के चलते लोगो ने "नया जीवन अपनाने की कोशिश की है" जैसे की सामाजिक दूरी रखकर जिंदगी में आगे चलना है कोरोना महामारी से बचना है.

कोरोना

श्री. मंगेश गवारे, सामान्य प्रशासन विभाग

कोरोना महामारी के कारण डिजीटाइजेशन को नया रुप दे दिया गया है जिससे कुछ नए पोर्टल सरकार द्वारा स्थापित किये गए ताकि लोगों के पास सुविधा जल्दी पहुचे जैसे की आरोग्य सेतु ऍप और बहोत विश्व विद्यालय ने कोरोना पर संशोधन करके उसके रोकथाम के लिए नए उपकरण प्रस्थापित किए है और कुछ सुचना प्रौद्योगिक क्षेत्रों ने घर से ही काम करने की उनके कर्मचारियों को अनुमति दियी है. जिससे लोगों को घरो में सुरक्षित रखा जाए.

कोरोना महामारी भारत सहित आज दुनिया के लगभग 180 देशों से अधिक देश प्रभावित हुए है और इससे अब तक करिबन 3 करोड लोग प्रभावित हो चुके है और काफी मात्रा में लोग इससे ठिक भी हो चुके है. विषाणु से 10 लाख लोगों की मौत भी हो चुकी है. 102 साल पूर्व 1918 में "स्पॅनिश बुखार" महामारी के कारण विश्वभर में तकरीबन पांच करोड से अधिक लोगों की मौत हो गयी थी. कोरोना महामारी जानलेवा बिमारी से घबराने की आवश्यकता नहीं है. विश्व स्वास्थ संघठन और स्वास्थ मंत्रालय के नियमों का पालन करके बचा जा सकता है. जितना हो सके दुसरे व्यक्तियों के संपर्क में आने से बचे और स्वस्थ रहें.

कोरोना

श्री. मंगेश गवारे, सामान्य प्रशासन विभाग

वैश्विक महामारी है कोरोना
इससे है बचना और बचाना
नही यह मामूली बीमारी
उठाओं जीम्मेवारी
अगर हो जान प्यारी
संयम की कठीण परीक्षा है कोरोना
बच्चें, बुढ़े और बीमार, खास खयाल रखना
एक सीख है कोरोना
उच-नीच, गरीब-अमीर, इसे ना माने खुद कोरोना
संकट की आग़ाज है कोरोना
हौसलों को बुलंद कर, इससे है उभरना
मिटाने हमारा अहंकार आया कोरोना
मनुष्य तू खुद को कभी सर्वश्रेष्ठ ना समझना
एक बडी जंग है कोरोना
देश-विदेश, प्रांत-प्रदेश, अपना-पराया भेद से
उठकर, इससें है लड़ना
डराने हमें आया कोरोना
कुछ नियमों का पालन कर, इसे है भगाना
जानलेवा हो सकता कोरोना
कुछ लापरवाही नां बरतना
लाख आयें ऐसे कोरोना
हमें है उन्हें हराना
उठों प्यारों
धैर्य कभी ना खोना
कोरोना का तय है जाना.

हिंदी सप्ताह 2020 के दौरान आयोजित कहानी लेखन स्पर्धा में प्रथम पुरस्कार प्राप्त

‘पश्चाताप’

श्रीमती कल्पना कुलकर्णी, सामान्य प्रशासन विभाग

श्रीनिवासजी और सुनेत्रा बडे खुश थे आज. दशहरा के सुमुहुर्त पर आज उन्होंने फिर एक बार नये घर में ग्रहप्रवेश किया था. घर का नाम “गोकुल” झगमगा रहा था. फिर एक बार इसलिए क्यों कि तीस साल पहले उन्हों ने एक छोटा घर बनाया था जब वो गांव से शहर आये थे. भाडे के मकान में रहते थे और नौकरी में पदोन्नति के बाद तनखा बढने पर उन्होंने एक छोटा घर खरीदा था. तभी भी वे आज से कम खुश नहीं थे. उनका पहला अपना घर था वो. बाद में सुनेत्रा से शादी और दो साल में छोटू का जन्म. छोटू का नाम प्रसाद रख दिया. प्रसाद भी भगवान के प्रसाद जैसा ही था, मीठा प्यारा. साल गुजरते गऐ प्रसाद पढाई के एक एक पायदान पादाक्रांत करते करते अभियंता बन गया. विदेशी शिष्यवृत्ती पाकर विदेश में चला गया. लेकिन अपने माँ बाप को भूला नहीं. उनका हर तरह ख्याल करता था. उनको विदेश यात्रा भी करवाई. एक छोटे गांव से आये श्रीनिवासजी जब विदेश होकर आयें तो फुले न समाते थें. विदेश यात्रा से लौटने के बाद उन्होंने बडा घर खरीदा. जिसके ग्रहप्रवेश के लिए प्रसाद भी आया था और अपने नजदीकी रिश्तेदारों को घर दिखाते दिखाते श्रीनिवासजी को बडी खुशी हो रही थी. श्रीनिवासजी के भाई का परिवार भी खुशी में शामिल था.

श्रीनिवासजी का छोटा भाई सुहास वो भी इसी शहर में आके बस गया. सुहास और श्रीनिवासजी का आना जाना तो था एक दूसरे के घर पर लेकिन सुहास की पत्नी सुनीला से वो थोडे नाराज थे. वह शहर से आयी हुई नये विचारों की थी. जब की श्रीनिवासजी अब भी थोडे पुराने विचारों पर अडे हुए थे. लेकिन जेठानी देवरानी में कोई अनबन नहीं थी. सुहास का लडका सुशील. उसने भी अपनी पढाई पूरी की. उसने वाणिज्य की पदवी पाकर चार्टर्ड अकाउंटंट की परीक्षा देना पसंद किया और छोटी मोटी नौकरी भी ढूंढ ली. जब श्रीनिवासजी ने कार खरीदी तब सुशील के पास स्कुटर थी. लेकिन वह धीरे धीरे प्रगति के पथ पर चल रहा था. नये घर का ग्रहप्रवेश ने श्रीनिवासजी के मन में अहंकार ने भी प्रवेश कर लिया. सुनेत्रा बदली नहीं थी लेकिन श्रीनिवास जी का लोगों के प्रति बर्ताव बदलने लगा. एक अहंमन्यता आने लगी. घर में नोकर—चाकर थे अब उनके दिन मजे में गुजर रहे थे. यहां सुशील सी.ए. पास हो गया. सुशील ने एक अच्छी लडकी पसंद करके शादी करली. एकदम सादगी से यह शादी हुई जब कि श्रीनिवासजी और नाराज हो गये. ना कोई धूमधाम बडों का मानसम्मान बल्कि सिर्फ घर के लोग धर्मिक विधी और छोटेसे हॉल में खाना. लेकिन शादी के बचे हुए पैसे से सुशील ने भाडे पर एक कार्यालय लिया और अपना व्यवसाय शुरु किया.

श्रीनिवासजी को भाई के प्रति प्यार तो था लेकिन अब उनके उपर पैसों की धून सवार थी. सुशील और अस्मिता सुशील की पत्नी अपने व्यवसाय में व्यस्त थे. व्यवसाय में तरक्की होने लगी और अस्मिता ने एक बच्ची को जन्म दिया. अब सुहास और सुनीला बहोत ही आनंदित हुए पोती के आते मानो लक्ष्मी आई थी. दिन गुजर रहे थे. श्रीनिवासजी ने अपना मित्रपरिवार बहुत बढाया था. उनके घर आना जाना उन्हें अपने घर बुलाना खाना पिना इसमें वह इतने मशगुल थे कि अपने भाई के परिवार की तरफ उनका लगाव कम होने लगा. ना तो सुहास उनके जितना रईस था ना उनके जैसा उसका मित्रपरिवार. अब भाई उनको मिस—मॅच लगने लगा. लेकिन सुहास का परिवार बीच बीच में उन्हे फोन करके उनकी पूछताछ करता था. संपर्क बनाये रखता था.

सब कुछ ठीक ठाक था और देश में महामारी ने प्रवेश कर लिया. तुरंत लॉकडाऊन घोषित किया गया. अब श्रीनिवासजी और सुनेत्रा अपने घर में बंद हो गये. नोकरों ने आना बंद कर दिया. फिर भी दोनो एक दूसरे के सहारे दिन काट रहे थे. अब दोस्तों का आना जाना गपशप खानापिना सब पर जैसा ताला लग गया. अचानक एक दिन श्रीनिवासजी नहाते समय पैर फिसलकर गिर गये. उनको संवारते संवारते सुनेत्रा को पसीना छूट गया. उनको जैसे तैसे स्नानघर से बाहर लाया और सुनेत्रा ने सुशील को दूरध्वनी किया. परिस्थिती की गंभीरता को देखकर सुशील तुरंत वहां पहुच गया. रुग्णवाहिका बुलाकर उनको अस्पताल में भरती करवाया. सभी जाँच और क्ष—किरण से लेकर बहुत सारी चिकित्साएं सब सुशील और अस्मिता की मदद से पार कर दी. प्रसाद को सब बताया गया लेकिन वो आने में असमर्थ था. सुहास का पूरा परिवार अब श्रीनिवासजी के लिए जैसे कि सहायक बन गया था, और सब की सहायता के फलस्वरुप श्रीनिवासजी अब घर लौटे. घर आने के बाद उनका आहार, हलकी कसरते, दवाईयां यह सब जिम्मेंदारी सुहास की सहायता से अस्मिता ने उठायी. सुनेत्रा ने बडे प्यार से सुहास के पूरे परिवार को ही अपने घरपर “गोकुल” में बुला लिया. अब पोती सिया के साथ खेलते हुएं उसकी प्यारी हरकतों को देखते हुए श्रीनिवासजी अपना पैर का दर्द भूलने लगे. धीरे धीरे श्रीनिवास जी की तबियत सुधरने लगी. वो घर में घूमफिरने लगे और मानों कि सुहास को कर्तव्यपूर्ती का समाधान मिला. वह अब अपने घर जाने के लिए श्रीनिवासजी और सुनेत्रासे पूछने ही जा रहा था. तब श्रीनिवासजी ने सबको उनके कमरे में बुलाया. आज श्रीनिवासजी का गला भर आया था आँखे नम हो गयी थी. सब इकठ्ठा होनेपर श्रीनिवासजी बोलने लगे. सुहास का हाथ हाथ में लिया और बोले मेरे छोटे भाई मुझे माफ करना. मेरी आँखे ये हादसे से खुल गई. धन की वजह से दृष्टि धुंधली हो गयी थी. मैं अपनों को छोडकर मित्रों के साथ बहक गया था. लेकिन आज मैं खुले दिल से कहता हूँ कि वो मेरा अहंकार था गर्व था. मुझे चोट आने के दिन से आज तक आप सबने मेरे लिए जो किया वो अमूल्य है. आप अब किधर नहीं जाएंगे. यह गोकुल आपका भी है . हम सब मिलकर साथ रहेंगे. इस विषय पर प्रसाद से भी बात हुई है. प्रसाद ने बडे खुशी से मेरे इस प्रस्ताव को सहमति दी है. सुहास कुछ नहीं बोल पा रहा था. तब श्रीनिवासजी ने थोडे उंचे आवाज में सुनाया मैं बडा भाई हूँ और आज आप मेरा कहना मान लो.

अब “गोकुल” में सिया की आवाज गुंजती है. भाई —भाई की गपशप लडती है. जेठानी—देवरानी रसोई घर में व्यस्त रहती है और सुशील अस्मिता अपने व्यवसाय में. “गोकुल” अब सच में “गोकुल” हो गया है.

छत्रपती शिवाजी महाराज जयंती व शिल्पाकृती अनावरण सोहळा.

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट विजय दीप या ठिकाणी प्रशासनाच्या वतीने कायमस्वरुपी शिवकालीन शिल्पाकृती साकारली असून शिवजयंतीच्या शुभ मुहूर्तावर, अखंड हिंदुस्थानचे आराध्य दैवत छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या पंचधातुच्या अर्ध पुतळ्याचे अनावरण मुख्य सुरक्षा अधिकारी श्री. सुनिल देशमुख यांच्या शुभहस्ते करण्यात आले करण्यात आले. या प्रसंगी खासदार अरविंद सावंत, कुलाबा विधानसभा संघटक श्री. गणेश सानप, स्थानिक नगरसेविका श्रीमती सुजाता सानप, स्थानीय लोकाधिकार समितीचे पदाधिकारी, मुंबई पोर्ट ट्रस्ट चे अधिकारी आणि कर्मचारी बहुसंख्येने उपस्थित होते. हा सोहळा मोठ्याा उत्साहात व जल्लोशात साजरा करण्यात आला.

माझी कोरोना यात्रा

श्री. मंगेश ज. सावंत, अर्थ विभाग

1. नभ मेघांनी आक्रमिले

आम्हीं दोघेही उभयतां essestial duty च्या अंतर्गत येतो त्यामुळे घाबरत घाबरत का होईना मे महिन्याच्या तिसऱ्या आठवड्यापासून आम्ही आमची जबाबदारी पार पाडण्यासाठी घराबाहेर पडलो. जितकी काळजी घेता येईल तेवढी काळजी आम्हीं दोघेही घेत होतो आणि मुख्य म्हणून आमच्या घरातील आई व मुलांपासून शक्य तो सोशल डिस्टंसिन्ग पाळत होतो ज्यायोगे आमच्या पासुन त्यांना कोणताही त्रास होऊ नये. आता नोकरीसाठी घराबाहेर पडत होतो ते एक calculated risk घेऊनच की कदाचित आपल्याला कधीही कोरोना होऊ शकतो कसे असते आज कोणीही अगदी कोणीही म्हणु शकत नाही की मला कोरोना होणारच नाही.त्यामुळे आज जे सुपात आहेत ते कधीही जात्यात जाऊ शकतात ह्याचा आम्हाला अंदाज होता पण त्यामुळेच की काय आम्ही बाहेर पडल्या दिवसांपासून आम्ही आमची व घरातील सर्वांची जास्त काळजी घेत होतो. हळदीचे गरम दूध, काढा, रोज steam घेणे, गरम पाणी पिणे व महिन्यातुन तीन दिवस अर्सेनिक अल्बम च्या गोळ्या घेणे, घराबाहेरून घरात आणलेली प्रत्येक वस्तु सॅनिटाईझ करणे. जेवढे जमेल तेवढी utmost care घेत होतो पण एक दिवस माझ्या बायकोला म्हणजे शुभांगीला ताप आला. आमच्या family डॉक्टर कडुन औषधं आणले एका दिवसात ताप गेला. तीन दिवसांनी मला ताप आला, तो ही एका दिवसात गेला पण ह्या दरम्यान बायकोच्या ऑफिस मधील काही जण पॉसिटीव्ह निघाले आणि मनाची घालमेल सुरु झाली.आम्हाला काहीच लक्षणें दिसत नव्हती पण आपली test करावी का? आमच्या फॅमिली डॉक्टरला विचारले तर त्यांनी test करायची कल्पनाच उडवून लावली म्हणाले "तुम्हाला कोणतेच symptoms नाहीत, oxygen लेवल 99% आहे तर नियमानुसार तुम्हाला test करायची गरज नाही. असलात तरी asymtomatic असाल. घरीच आराम करा.स्वतःला 10 दिवस isolate करा. गरज वाटलीच तर मी औषधं देईन नां. पण test केलीत व positive आलात तर घरी राहायला मिळणार नाही. तुमचे घर मोठे असेल, अगदी दोन बेडरूम असले तरी. हे बघा, मला तर काहीच लक्षणे दिसत नाहीत. उगाच पॅनिक होऊ नका ज्यांना खरंच गरज आहे त्यांच्या test होऊ दे.!! मला तर पटले पण बायकोच्या डोक्यातुन कोरोनारूपी किडा आता चांगलाच वळवळु लागला होता. तिला खात्री होती की आपण negative येणार. कारण तिची व माझी तब्येत ठणठणीत होती. तिने मला पटवले. म्हणाली "ऐक ना आपण दहा दिवस कशाला quarantine व्हायचे. आपण negative असणार. test करु मग आपण परत नॉर्मल life जगू शकतो" त्यावेळी हा विचार मनातही नाही आला की positive असलो तर ? आणि तिनेच मेट्रोपोलीस लॅब ला फोन लावला. पण त्यावेळी काळ्या कुट्ट नभांनी आमचे आकाश झाकोळून जाणार आहे ह्याची सुतराम कल्पना नव्हती. टीव्ही वर राहुल देशपांडे गात होते.

नभ मेघांनी आक्रमिले.. तारांगण सर्वही व्यापुनि गेले ..नभ मेघांनी आक्रमिले.!!!

2.सरकारी बडगा

घरी येऊन लॅबवाले swab घेऊन गेले आणि खिशातुन 5600 रुपये आणि दोन दिवसांनी BMC वाल्यानी कळविले तुम्ही दोघेही पॉसिटीव्ह आहात तुमच्या घरात 78 वयाची आई व दोन लहान मुले आहेत त्यामुळे लक्षण नसली तरी आम्ही तुम्हांला घरात quarantine व्हायला देणार नाही. झाले, आमच्या घरातच quarantine होण्याच्या कल्पनेला चांगलाच सुरुंग लागला. "काय तो निर्णय पटकन घ्या नाहीतर आम्ही आमची team घेऊन येणार व तुम्हाला आमच्या quarantine सेन्टरला घेऊन जाणार." BMC वाल्या बाईने दम भरला. सरकारी बडगा काय असतो त्याचा अंदाज आला. अगदी helpless वाटले हो त्या वेळी.कोरोनाग्रस्त झालेल्या आम्हांला आमचा असा काही voice राहिला नाही. कारण तसे कोरोनाग्रस्त म्हणजे आम्ही समाजाचे गुन्हेगारच होतो. आता कोरोना घेऊन समाजात फिरणे वा राहणे हे कायद्याने गुन्हा होता. आता आमच्या स्वातंत्र्यावर गदा आली होती. डोकंच चालेना आणि मग आमच्या BPT हॉस्पिटल मध्ये दोघांनीही जाण्याचा निर्णय घेतला. नोडल ऑफिसर प्रजापती साहेबानां फोन केला, त्यांनी धीर दिला व कोणतीही काळजी करु नका असे सांगितले आणि मग चक्र वेगाने फिरू लागली. तुम्हाला घ्यायला हॉस्पिटलची ॲम्ब्युलन्स लवकरच येते आहे हे ऐकल्यावर जीव भांड्यात पडला.

आम्ही पॉसिटीव्ह आहोत व BPT हॉस्पिटल ला जात आहोत. "घरी आम्ही बॉम्बच फोडला" कमीतकमी दहा दिवस राहावे लागेल. तुम्ही सगळे सांभाळून रहा व काही symptoms दिसले तर लगेच test करुन घ्या. माझ्या मुलीवर सगळ्या घराची जबाबदारी दिली. आईला समजावले पण लांबूनच. मास्क घालुन व अंतर राखुनच कोरोनाने आपल्या माणसाचा स्पर्शही महाग केला हो. एका क्षणात आम्ही कोरोनाग्रस्त म्हणजे समाजातुन हद्दपार झालो होतो. कुटुंबातील पाचही सदस्याच्या डोळ्यात पाणी होते. आई तर पार हबकुन गेली होती. तिचा एकुलता एक लाडका मुलगा व त्याची बायको सद्य स्थितीतील एका महाभयंकर रोगाने ग्रस्त झाले होते. परिस्थिती खुप गंभीर होती पण मला हातपाय गाळून चालणार नव्हते नाहीतर घरातले सगळेच खुप टेन्शन मध्ये आले असते त्याही परिस्थितीत मी विनोद करत होतो वातावरण हलके करण्याचा प्रयत्न करत होतो. दहा दिवस असेच जातील म्हणुन समजावत होता. पण सगळेच वरकरणी होते आतुन प्रत्येकजण रडत होतो.

पाऊस खुप असल्याने ॲम्ब्युलन्स दुपारी थोडी उशिराच आली. देवाला व आईला लांबूनच नमस्कार करुन, काळजी घ्या म्हणतं जड अंतकरणाने आम्ही दोघेही ॲम्ब्युलन्स मध्ये बसलो. आमच्या घरापासून, माणसांपासून दूर. दूर चाललो होतो बातम्या पाहुन वेडावलेले मन व त्यामुळेच आपण घरी परत येवू की नाही? ही शंकाही मनात खोल कुठेतरी उचल खात होती.

ॲम्ब्युलन्स व्वाव व्वाव व्वाव करत झपाट्याने हॉस्पिटलच्या दिशेने निघाली होती. मनात काहूर माजले होते आणि काळजात गाणे उमटले होते.

अखेरचा हा तुला दंडवत सोडुन जाते गाव

देऊळ सोडुन धाव देवा

देऊळ सोडुन धाव!!

3. BPT हॉस्पिटल

मनामध्ये विचारांचे काहूर माजले होते. ॲम्ब्युलन्स च्या खिडकीतुन थंड हवा आत येत होती आणि मनात येणाऱ्या वाईट विचारांची मालिका खंडित झाली आणि कशी काय पण मनाची नेगेटिव्हिटी गेली. मनात म्हटले, आता मनात वेडेवाकडे विचार आणायचेच नाहीत, बस जे होईल ते पाहायचे. भले आज आपण कोरोना positive आहोत पण मनातही positive विचारच आणायचे. all is well.. all is well.. थ्री इडियट ह्या चित्रपटातील मंत्र छातीवर हात ठेवत म्हटला. खरं सांगतो छातीवर आलेला कोरोना रुपी राक्षसाचा दाब बराच कमी झाला. मी शुभाला म्हणजे माझ्या पत्नीलाही सांगितले अजिबात वेडा वाकडा विचार करु नको. मनाला उगाच शिणवू नकोस.शांत रहा व बस काही दिवस हॉस्पिटल मध्ये राहायचे आहे मग आपले जग परत आपल्याला मिळणार हे लक्षात ठेव!!

2001–2003 ह्या काळात हॉस्पिटल ॲडमिनिस्ट्रेशनला मी होतो त्यामुळे हॉस्पिटल अगदी परिचयाचे होते. बराचसा स्टाफ मला ओळखत होता. मानत होता त्यामुळे मी अगदी निश्चिन्त होतो पण हॉस्पिटलच्या आवारात ॲम्ब्युलन्स शिरली आणि लक्षात आले सारा चेहरा मोहराच बदलला आहे. सगळीकडे PPE सुट घालुन माणसे बिन चेहऱ्याने वावरत होती ओळखीचे काहीच दिसेना गेल्या वर्षीचं हॉस्पिटलचे renovation केले त्यात माझ्या ओळखीचे हॉस्पिटल पार बदलले होते. आमचे रिपोर्ट आधीच काढलेले असल्याने आम्हाला लगेचच isolation वॉर्ड मध्ये हलवले.नशिबाने व थोड्या ओळखीने अगदी बाजु बाजूचे वॉर्ड मिळाले. दोन्ही वॉर्ड मधला कॉरिडॉर कॉमन होता रोजची काही वेळ भेट व्हायची.तेवढंच बर वाटायचं!

जन्माला हॉस्पिटल मध्ये आलो त्यांनतर बरोबर 47 वर्षांनी मी एखाद्या हॉस्पिटल मध्ये प्रथमच ॲडमिट होत होतो. मन काहीसे साशंक होते. कसे होणार? आपल्याला ह्या कोरोनावर मात करायची आहे नां. मग जे काही उपचार करणार ते सगळे पॉसिटीव्हली करुन घ्यायचे विनातक्रार तरच मी कोरोना नेगेटिव्ह होणार होतो.

माझा वॉर्ड अगदी मोठा होता. बेड अगदी लांब लांब होते पण 26 पेशंट होते. कोणी खोकत होते तर कुणी अंग दुखीमुळे विव्हळत होते कुणी अगदी ध्यानस्थ बसले होते.काही जण अगदी मजेत कानाला इअरफोन लावून web series बघत होते, वातावरण अगदी मिश्र भावनांचे होते. मला तर काहीच symptoms जाणवत नव्हते तेव्हा मी ही ठरवले जेवढे दिवस इथे आहे तेवढे दिवस मस्त आराम करायचा व इअरफोन लावून डेटा पॅक संपे पर्यंत webseries पाहायच्या पण चुकूनही बातम्या बघायच्या नाहीत. थोडा योगा करायचा. काय असते, वातावरण तुम्हाला शिकवते हो, कसे जगायचे ते मनातुन कोरोना झालाय हे काढुनच टाकले..!!

आणि विविध test ची मालिका सुरु झाली.. x–ray काढला, ECG काढला, blood test झाल्या आणि मग औषध उपचार ठरवले गेले. दुसऱ्या दिवशी थोडी तोंडाची चव व वास कमी झालाय असे जाणवले पण हे होणार हे माहीत होते. आत कोरोना विषाणु व माझ्या शरीरातील संरक्षक पेशींची लढाई सुरु होती. मध्येच शरीरात आत गरम गरम जाणवायचे पायातून गरम वाफा निघताहेत असे वाटायचे पण थर्मामीटर मध्ये temp नॉर्मल असायचे. मी आत होणाऱ्या युद्धाकडे दुर्लक्ष केले म्हटले लढा तुम्ही, मी आपला व्हाट्सअप व webseries मध्ये स्वतःला गुंतविले. पण हा कोरोना केवळ शरीरावर परिणाम नाही करत, कोरोना हा केवळ शारिरीक नाही तर मानसिक रोग आहे ह्या मताला मी आलो आहे. कोणाचे आपुलकीचे फोन आले, मेसेज आले की मला भरून यायचे. इतकेच नाही तर सिरीयल वा चित्रपटातील नात्यांचे भावनिक प्रसंग पाहुन माझे डोळे भरायचे. माझे मलाच काही कळत नव्हते, इतका भावना प्रधान मी कधीच नव्हतो अगदी मनाने व शरीराने तंदुरुस्त होतो पण आत शरीराबरोबर मनालाही कोरोनाची लागण झाली होती.!!!

तीन दिवसातल्या वास्तव्यात बऱ्याच पेशंटशी ओळखी झाल्या. प्रत्येकाचा अनुभव ॲडमिट होतानाच वेगळा होता पण सगळेच सात ते आठ दिवसात recover झाले होते.आमच्या प्रजापतीसाहेबांचा अधून मधुन तब्येतीच्या चौकशीसाठी फोन यायचा त्यावेळी प्रशासन आपल्या पाठी उभे आहे अशी जाणीव व्हायची. आमच्या BPT हॉस्पिटल मधील सगळा स्टाफ अगदी मनापासुन झटत होता मला त्यांचे जाम कौतुक वाटायचे. तो PPE सुट घालुन वावरणे अगदीच कठीण असते घामाघुम व्हायला होते. घामाघुम झालेल्या अवस्थेत डॉक्टर व सिस्टर्स जीं काय मेहनत घेतात त्याला तोड नाही. nurse ना सिस्टर्स का म्हणतात त्याचा मी प्रत्यक्ष अनुभव घेतला. काय जबरदस्त काम करतातं त्या आणि तेही इतक्या सगळ्या कोरोना पेशंट मध्ये राहुन. शांत चित्ताने आपली मनःशांती न ढळू देता ह्या आरोग्यकर्मींना देवदूत का म्हणतात त्याचा प्रत्यय आला. ह्या सगळ्याच आरोग्यकर्मींना माझा मानाचा मुजरा.

तीन दिवस हॉस्पिटल मधले खुप जड गेले. पण माझे रिपोर्ट चांगले होते, गेलेली चव व वास परत आला होता. वयहि 50 च्या आतले होते त्यामुळे माझीं रवानगी covid आश्रमला झाली आणि आमचे भूतपूर्व चेअरमन भाटिया साहेबांनी आपल्या कर्मचाऱ्यांना काय भेट दिली त्याचा प्रत्यय आला, जीवनातील एक सुखद अनुभव..!! covid आश्रम मधील जीवन शैली अगदी आखिव रेखीव होती व त्यातील मुख्य आकर्षण होते सकाळचा ऑनलाईन योगा, दिवसभरातील मेडिटेशन चे सेशन आणि मुख्य म्हणजे त्या भल्या मोठ्या कॅम्पस मध्ये फिरण्याची परवानगी. अगदी big boss च्या घरासारखी आश्रमाची निर्मिती

केली होती. डॉक्टर व nurse होते पण ते आमचे निरीक्षण कॅमेऱ्यातुन करायचे, जागोजागी फोन होते त्यातुन आम्ही त्यांच्याशी संपर्क साधायचो. सगळ्या सुचना स्पीकर वरुन यायच्या. आमचे आम्हीच होतो, मस्त कॅफेटेरीया होता तिथे स्वतः जेवण घ्यायचे. मोठा टीव्ही होता, छान कार्यक्रम बघायचे अगदी नेटफ्लिक्स पण होते.सात दिवस इथले अगदी मस्त गेले. आत्मविश्वास परत मिळाला, भले बुरे ते विसरून जावे जरा विसावू ह्या वळणावर, ह्या वळणावर हे गाणे मनात फेर धरू लागले होते कारण इथे शुभांगीही बरोबर होती लेडीज वार्ड मध्ये, रोजची भेट व्हायची योगा व मेडिटेशन सेशनला, कॅफेटेरियात, त्यामुळे एकाकी वाटत नव्हते, जे हॉस्पिटलला वाटते. हॉस्पिटलला आपले माणूसच दिसत नाही हो आजूबाजूला, त्यामुळे बरेच जण घाबरतात व पुढे काही complications होतात. भाटिया साहेब covid आश्रम तयार करण्याच्या तुमच्या दूरदृष्टीला सलाम.

4. घरची परिस्थिती

आम्ही घरातील दोन कर्ती माणसे अचानक घरातून corona या सध्याच्या महाभयानक आजाराच्या गर्तेत सापडून हॉस्पिटल मध्ये गेलो ह्याचा आईने चांगलाच धसका घेतला पण माझी लेक खंबीर होती. सगळ्या घराचा तिने ताबा घेतला सगळ्यांची काळजी घेतली. आम्ही सांगितल्याप्रमाणे steam घेणे, ऑक्सिजन लेव्हल तपासणे. जेवण करणे, काही हवे असेल तर बाहेरच्यांची मदत घेणे हे सर्व धडाडीने करत होती. आमची सोसायटी व त्यातील माणसे म्हणजे अगदीच co-operative सगळयांची माझ्या कुटुंबाला मदत करण्याची स्पर्धा होती जणु. अगदी ठरवून नास्ता, जेवण पाठवायचे, सगळी जण मला फोन करुन आम्ही आहोत आई व मुलांची काही काळजी करु नको धीर द्यायचे. काही ठिकाणी कोरोना म्हटले की अगदीच वाळीत टाकतात कुटुंबाला पण आमच्या कडे अगदी वेगळेच चित्र होते, सोसायटी कमिटी व सगळेच सदस्य अगदी पाठीशी उभे होते. सगळ्या वॉचमनना सुचना होत्या की ह्यांच्या घरातून काही वस्तु आणायला सांगितली की लगेच आणून द्यायची. शेजारी देखील वॉट्सअप वर लिस्ट पाठवली की सामान घरी पोच करायचे. सगळ्यांनीच ह्या कठीण प्रसंगी पाठीशी उभे राहुन ह्या प्रसंगातून बाहेर पडायला मदत केली. त्यामुळे आम्हाला घरची तेवढी चिंता वाटत नव्हती फक्त घरातील कोणाला symptoms दिसू नयेत व सगळे व्यवस्थित असावेत हिच प्रार्थना रोज करत होतो पण..

5. काळे मेघ पुन्हा दाटले

आमचे covid आश्रम मध्ये अगदी छान दिवस जात होते.पण, एके दिवशी मोठ्या बहिणीचा फोन आला, तु काळजी करशील म्हणुन तुला सांगितले नाही पण आता आईला ऍडमिट करण्याशिवाय पर्याय नाही म्हणुन तुला कळवतोय आईला पण त्रास होऊ लागलाय symptoms दिसताहेत. तिचा आजच रिपोर्ट काढला उद्या कळेल, पण symptoms वरुन असे वाटतेय की तीही positive येवू शकते, माझ्या दोन्ही बहिणी व भावोजी आईला बरे नाही म्हटल्यावर बरीच धावपळ करत होते पण ऍडमिट करण्यापूर्वी एक जबाबदार व्यक्ती म्हणुन मला कळविण्याशिवाय त्यांना पर्याय दिसला नाही त्यामुळेच नाईलाजाने त्यांनी मला फोन केला.

तुम्ही positive आहात असे जेव्हा मला सांगण्यात आले त्यावेळी मी जेवढा घाबरलो नव्हतो त्यापेक्षा जास्त मी आता हादरलो कारण आईचे वय..ज्या गोष्टीची मनात सतत भीती वाटत होती तीच गोष्ट समोर येऊन ठाकली होती. आणि मी काहीच करु शकत नव्हतो, अगदी हतबल होतो. पारतंत्र्याचे दुःख काय असते त्याची मला जाणीव झाली तसेच उठावे व इथून पळून घरी जावे असे वाटू लागले पण कायदा जाणणारा व कायदा मानणारा मी, कायद्याविरुद्ध जाऊ शकत नव्हतो कारण कोरोनाग्रस्तांनी असे समाजात मिसळणे म्हणजे The Epidemic Diseases (Amendment) Ordinance, 2020 च्या अंतर्गत गुन्हा होता, मन एक सांगत होते तर हृदय वेगळेच अगदी, अगदी अगतिक वाटत होते, आईला बरे नाही, अरे देवा तिला जर कोरोना असेल तर आमच्यामुळेच तिला झाला म्हणावे लागेल कारण गेले पाच महिने ती घराबाहेर पडली नव्हती, मी स्वतःला तिचा गुन्हेगार समजु लागलो आणि माझी मनःशांती हरवली रात्रीची झोप गेली आणि मला अगदी आजारी असल्यासारखे वाटु लागले असे वाटायला लागले की परत मला हॉस्पिटलला ऍडमिट करावे लागते की काय, मी मागेच म्हटले ना हां कोरोना मनावर परिणाम करतो, आणि आईचा रिपोर्टही positive आला. तिला जरा जास्त त्रास होत होता, ऑक्सिजन लेव्हल 90 च्या खाली गेली आणि BMC वाल्यानी सल्ला दिला तुम्ही मोठे हॉस्पिटल बघत जास्त वेळ काढु नका, सरळ आमच्याकडे ऍडमिट करा त्यांना सध्या ताबडतोब उपचाराची गरज आहे आणि तिची रवानगी बोरिवलीच्या भगवती हॉस्पिटल मध्ये केली. मला हे सर्व फोन वर कळत होते पण मी काहीच करु शकत नव्हतो मी बहिणीला सांगितले तुम्ही परिस्थितीनुसार काय तो निर्णय घ्या, माझे हातपाय अगदीच गळून गेले होते आणि आता मला मुलांचीही काळजी वाटु लागली, घरात ती एकटीच होती पण त्यांच्या पाठीशी आमची पुर्ण सोसायटी होती.

Discharge मिळुन घरी जाण्यास केवळ दोन दिवस बाकी होते मला बरे होऊन घरी जायचे होते, मनःशांती ढळवून पुन्हा हॉस्पिटलला जायचे नव्हते आणि मी मेडिटेशनची कास धरली. अक्षरशः मोबाईल वर सद्गुरुंचे मेडिटेशन वरील video लावून ध्यानस्थ बसत होतो ज्यायोगे मन ताळ्यावर येईल बायकोला त्रास होईल म्हणुन दोन दिवस मी यातलं काहीच सांगितले नव्हते. ती अज्ञानात आनंदित होती. मी सगळ्यांना सांगुन ठेवले होते की आईबद्दल तिला काही सांगु नका, तिला खुप मानसिक त्रास होईल पण दोन दिवसांनी मनावरचा ताण खुप असह्य होऊन मीच तिला सगळे सांगितले आणि खरे सांगतो माझ्या मनावरचा ताण हलका झाला. काय होत होते की तिच्यापासून हे सगळे लपविण्यात माझी तारांबळ होत होती. तिला समजावत असताना मी मलाही जणु समजावत होतो, सगळे ठीक होईल म्हणुन सांगत होतो आणि नकळत देवाला साकडे घालत होतो, गणपतीबाप्पा, सगळे ठीक कर रे बाप्पा. !!!

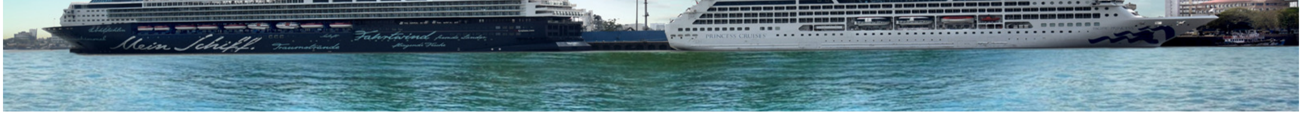

दोन दिवसांनी आम्हाला covid आश्रम मधुन discharge मिळाला. तब्बल दहा दिवस आम्ही घरापासून, मुलांपासून दूर होतो. Discharge मिळाला त्याचा आनंद होताच पण आई अजुन हॉस्पिटलला आहे ह्याचे शल्यही होते. सात दिवस आम्हाला home qurantine राहायचे होते. त्यावेळी देखील आमचे मुलांवर विशेष लक्ष होते की त्यांना कोणताही त्रास होत नाही नां? पण देवाची कृपा म्हणावी लागेल की ते कोरोना पासुन लांब होत.!!!

6. झाले मोकळे आकाश

आईशी मी रोज मोबाईल वर बोलत होतो. ती भगवती हॉस्पिटलच्या ट्रीटमेंट वर खूष होती. BMC पेशंटची खुप चांगली काळजी घेत होती. आपल्या मनात सरकारी व्यवस्थेबद्दल एक नकारात्मक भावना असते पण खरे सांगतो ह्या कोरोनाच्या काळात BMC खुप छान काम करतेय. त्यांच्याकडे सगळी औषध, injections उपलब्ध आहेत जीं बऱ्याच pvt हॉस्पिटल कडेही नाहीत. आणि 22 ऑगस्टला घरोघरी बाप्पा विराजमान झाले. त्याच दिवशी आमच्या आईलाही हॉस्पिटल मधुन discharge मिळाला. आतापर्यंत घरावर, मनावर काळ्या मेघांचे जे सावट होते ते दूर झाले.!! झाले मोकळे आकाश.. झाले मोकळे आकाश.

7. उपसंहार

आता काहीं मनमोकळे पणे तुमच्याशी बोलायचे आहे. माझी ही कोरोनायात्रा अगदी सविस्तरपणे मी तुमच्या समोर मांडली कारण अश्या प्रसंगातून बरेच जण गेले असतील किंवा भविष्यात जाऊ शकतील. कोणीही ठामपणे सांगु शकत नाही की मला कोरोना होणारच नाही पण झालाच तर धीर येण्यासाठी हा माझा यात्रावृत्तांत. बरोबर महिन्याभरापूर्वी म्हणजे 31जुलै ला मला ताप आला होता व नंतर त्याचे निदान कोरोना positive झाले व आज 31 ऑगस्ट आहे. महिन्याभरात कोरोनावर मी बरेच मनन व चिंतन केले त्यातुन जे काही सापडले ते तुमच्यासमोर ठेवू इच्छितो.

1. सध्या पावसाळी दिवस आहेत सर्दी, खोकला, ताप नित्य वर्षाप्रमाणे येणारच तर तसे काही झाले तर उगाच घाबरू नका, ही लक्षणे म्हणजे लगेच कोरोना झाला असे समजु नका व स्वतःहुन test करु नका. तसेच काही कोणा कोरोनाग्रस्तांच्या संपर्कात आला असाल तर गोष्ट वेगळी आपल्या डॉक्टरच्या सल्ल्याप्रमाणे वागा.

2. ह्या लक्षणांबरोबर जर पाठदुखी असेल, चक्कर येत असेल, तोंडाची चव गेली व वास घेण्याची क्षमता कमी झाली, पोटात बिघडल्यासारखे वाटले, जेवण जात नसेल, मळमळल्यासारखे होत असेल तर मात्र डॉक्टरांना दिसणारी लक्षणे लगेच सांगा कारण जितक्या लवकर योग्य ती उपाययोजना करणार तितका जीवाला धोका कमी अश्या वेळी डॉक्टरच्या सल्ल्याने कोरोनाची test करायला मागेपुढे बघु नका.

3. चुकून तुम्ही कोरोनाच्या तावडीत सापडला तर अजिबात घाबरू नका. तुम्ही निश्चित बरे होणार ह्याची खात्री बाळगा. आपले मन शान्त ठेवा कारण घाबरलात तर शरीरात असलेले अन्य रोग उठाव करतात व कोरोना विषाणूशी हातमिळवणी करुन तुमच्या शरीरातील रोग प्रतिकारक शक्तीशी लढाई करतातं जीं मग हतबल होते.म्हणुन आपली रोग प्रतिकारक शक्ती अगोदरच वाढवून ठेवा जसे रोज घरचे सकस अन्न घ्या, रोज गरम हळद दूध दोन वेळा प्या, सकाळी gargaling करा रोज steam घ्या व महिन्यातुन तीन दिवस अर्सेनिक अल्बम च्या गोळ्या घ्या कदाचित आम्ही हे सर्व अगोदरपासून करत होतो त्यामुळे आमच्यावर कोरोनाने प्रभाव दाखवला नाही.

4. अत्यंत महत्वाचे.

हॉस्पिटल मध्ये ऍडमिट व्हावे लागत असेल तर प्रथम पसंती BMC हॉस्पिटलला द्या कारण आज त्यांच्या डॉक्टरांना जेवढा कोरोनाशी लढण्याचा अनुभव आहे तेवढा कोणालाच नाही व त्यांच्याकडे सर्व औषधं व इंजेक्शन्स उपलब्ध आहेत. आम्ही BPT हॉस्पिटलला गेलो कारण कर्मचारी म्हणुन ते आम्हाला उपलब्ध होते पण ही सोय सगळ्यांना नाही म्हणुन सांगतो BMC हॉस्पिटल चांगला पर्याय आहे. जर खुप पैसे सहज खर्च करु शकत असाल तर मोठी हॉस्पिटलस निवडा पण चुकूनही छोट्या हॉस्पिटल मध्ये जाऊ नका. त्यांना कोरोनाशी लढण्याचा तेवढा अनुभव नाही. (हे माझे प्रांजळ मत आहे)

5. मन खंबीर तर शरीर हा मंत्र लक्षात ठेवा उगाच पॅनिक होऊ नका. आता पूर्वीसारखी परिस्थिती राहिली नाही.पेशंट बरे होऊन घरी येताहेत हे लक्षात असुद्या.

6. जर झालाच कोरोना तर उगाच नशिबाला दोष देऊ नका व मलाच का? असा विचार करुन मनाला दमवू नका.

7. लक्षात ठेवा जितक्या लवकर ह्यावर उपचार सुरु होतील तितकाच तुम्हाला त्रास कमी होईल त्यामुळे उगाच लपवत राहु नका आणि जरा जरी संशय वाटला तर स्वतःला इतरांपासून quarantine करुन घ्या कारण जरी तुम्ही asymtomatic असाल पण समाजातील अनेकांना तुम्ही positive करु शकता. घरातही अश्या वेळेला मास्क वापरा व आपल्या जिवलगांना जपा.

अभिनंदन....अभिनंदन...अभिनंदन

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में अच्छे अंक पानेवाले विद्यार्थिओं एंव उनके अभिभावकों का अपना पोर्ट की ओंर से हार्दिक अभिनंदन..

माध्यमिक शालांत प्रमाणपत्र परीक्षा-2020

कुमारी चिन्मयी अभिजीत सावंत
श्री. अभिजीत महादेव सावंत,
(अर्थ विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(98%) अंक से उतीर्ण

कुमारी स्वरा सुनिल पाटील
श्री.सुनिल मनोहर पाटील,
(सतर्कता विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(98%) अंक से उतीर्ण

कुमार नैतिक वर्मा
श्री.सत्येन्द्र कुमार वर्मा,
(पत्तन विभाग) के सुपुत्र
10 वी. (सीआयएससीई) में
(97.07%) अंक से उतीर्ण

कुमार समर्थ किरण राणे
श्री. किरण विश्वनाथ राणे,
(अर्थ विभाग) के सुपुत्र
10 वी. (सीबीएसई बोर्ड) में
(97.40%) अंक से उतीर्ण

कुमारी अन्वेषा द्विवेदी
श्री. अभिजीत दुबे,
(पत्तन विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (सीबीएसई) में
(95.06%) अंक से उतीर्ण

कुमारी अनघा प्रशांत पिंगळे
श्रीमती सुचिता प्रशांत पिंगळे,
(चिकित्सा विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(94.80%) अंक से उतीर्ण

कुमारी सोनल प्रकाश सोळसकर
श्रीमती हर्षदा प्रकाश सोळसकर,
(संपदा विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(94.40%) अंक से उतीर्ण

कुमारी आभा लक्ष्मिकांत सातवसे
श्री.लक्ष्मिकांत भास्कर सातवसे,
(अर्थ विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(94%) अंक से उतीर्ण

कुमार दुर्वेश कृष्णा रोगे
श्री. कृष्णा गोविंद रोगे,
(स्थापत्य विभाग) के सुपुत्र
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(92.80%) अंक से उतीर्ण

कुमारी केतकी रोहन नार्वेकर
श्री. रोहन कृष्णा नार्वेकर,
(अर्थ विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (सीबीएसई बोर्ड) में
(92%) अंक से उतीर्ण

कुमार अभिषेक संजय धुमाळ
श्री.संजय बाजीराव धुमाळ,
(चिकित्सा विभाग) के सुपुत्र
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(91.80%) अंक से उतीर्ण

कुमारी सिमरन जितेंद्र पिंपळे
श्री.जितेंद्र दत्तात्रय पिंपळे,
(संपदा विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(91.80%) अंक से उतीर्ण

कुमार यश महेश कोयंडे
श्री. महेश शांताराम कोयंडे,
(अर्थ विभाग) के सुपुत्र
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(91.60%) अंक से उतीर्ण

कुमारी अनुजा भूषण बांग्रे
श्री. भूषण विनायक बांग्रे,
(यातायात विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(91.60%) अंक से उतीर्ण

कुमार भवदिप अरुण गांगुर्डे
श्री.अरुण सिताराम गांगुर्डे,
(यातायात विभाग) के सुपुत्र
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(91%) अंक से उतीर्ण

कुमार सिध्दार्थ सुधाकर कोळी
श्री. सुधाकर गणपत कोळी,
(संपदा विभाग) के सुपुत्र
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(90.80%) अंक से उतीर्ण

कुमार आदित्य प्रकाश जाधव
श्री. प्रकाश मारुती जाधव,
(यांत्रिकी अभियंता विभाग) के सुपुत्र
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(90.20%) अंक से उतीर्ण

कुमार ओम प्रभाकर बनकर
श्री. प्रभाकर यशवंत बनकर,
(यातायात विभाग) के सुपुत्र
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(89.60%) अंक से उतीर्ण

अभिनंदन....अभिनंदन...अभिनंदन

माध्यमिक शालांत प्रमाणपत्र परीक्षा-2020

कुमारी श्रावणी दत्तात्रय मल्हार
श्रीमती अर्चना दत्तात्रय मल्हार,
(यातायात विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(89.60%) अंक से उतीर्ण

कुमारी मिलोनी अनिल तारी
श्रीमती कांचन अनिल तारी,
(यातायात विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (आयजीसीएसई) में
(89.04%) अंक से उतीर्ण

कुमारी तन्वी अतुल शिंदे
श्री.अतुल अंकुश शिंदे,
(संपदा विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(88.20%) अंक से उतीर्ण

कुमारी वैष्णवी किरण पातकर
श्रीमती कल्पना किरण पातकर,
(संपदा विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(87.20%) अंक से उतीर्ण

कुमारी वैभवी दत्तात्रय दरेकर
श्री.दत्तात्रय जयसिंग दरेकर,
(सामान्य प्रशासन विभाग) की सुपुत्री
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(86.80%) अंक से उतीर्ण

कुमार ओम महेष आंबेकर
श्रीमती पुर्वा महेष आंबेकर,
(चिकित्सा विभाग) के सुपुत्र
10 वी. (एसएससी बोर्ड) में
(86.80%) अंक से उतीर्ण

उच्च माध्यमिक शालांत प्रमाणपत्र परीक्षा-2020

कुमारी श्रुति संतोष पालव
श्रीमती शिवप्रिया संतोष पालव,
(संपदा विभाग) की सुपुत्री
12 वी. (एचएससी बोर्ड) में
(93.23%) अंक से उतीर्ण

कुमारी अदीती आनंदकुमार कनोजिया
श्री.आनंदकुमार कनोजिया,
(अर्थ विभाग) की सुपुत्री
12 वी. (एचएससी बोर्ड) में
(93.08%) अंक से उतीर्ण

कुमार ओमकार मनोज बांदेकर
श्रीमती प्रियांका मनोज बांदेकर,
(चिकित्सा विभाग) के सुपुत्र
12 वी. (एचएससी बोर्ड) में
(88.62%) अंक से उतीर्ण

कुमारी उर्वी सुहास सावंत
श्री.सुहास वाय. सावंत,
(कल्याण प्रभाग) की सुपुत्री
12 वी. (एचएससी बोर्ड) में
(87.69%) अंक से उतीर्ण

कुमारी शरमीन निसार अहमद काझी
श्री.निसार अहमद आब्बास काझी,
(स्थापत्य विभाग) की सुपुत्री
12 वी. (एचएससी बोर्ड) में
(87.38%) अंक से उतीर्ण

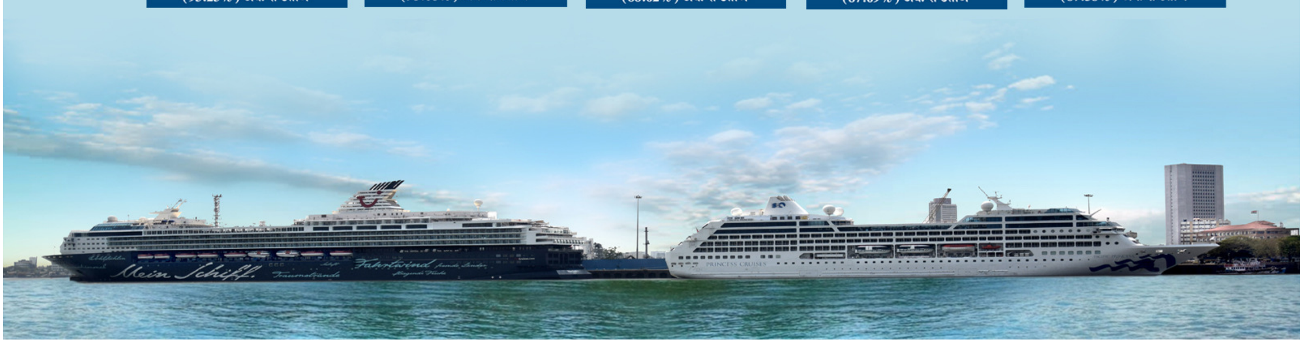

सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी

श्री. पवन भारती, हिंदी अधिकारी

हमारे चारों तरफ सूचनाओं का जाल- सा बिछा हुआ है. अपने चारों तरफ हमें सूचना प्रौद्योगिकी का शोर सुनाई देता है. हमने तकनीकी के क्षेत्र में, वैज्ञानिक आविष्कारों के क्षेत्र में आशातीत प्रगति कर ली है. हमें यह कहते हुए भी गौरव का आभास होता है कि आज मनुष्य पृथ्वी ही नहीं बल्कि अन्य ग्रह मंगल पर भी जा पहुंचा है. उसके वहां पर भी जीवन की कल्पना को साकार रूप देना शुरु कर दिया है. इससे पूर्व मनुष्य ने चंद्रमा पर पहुंच कर अपनी योग्यता और साहस का परिचय दिया है. यह सब यूं ही संभव नहीं हो गया. मनुष्य की इस सफलता का श्रेय विज्ञान- तकनीकी के क्षेत्र में मनुष्य के अथक प्रयास को जाता है. आज हम पृथ्वी पर निरंतर बदल रहे जीवन को देख रहे हैं वो सब विज्ञान से संभव हो पाया है. ' सूचना- प्रौद्योगिकी' भी अनेक वैज्ञानिक विषयों में से एक है, जिसमें विशेष रूप से सूचना का उपयोग वैज्ञानिक तरीके से करना मुख्य लक्ष्य होता है. सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में समझने के लिए हमें यह जानना आवश्यक है कि यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- सूचना और प्रौद्योगिकी. सूचना को हम अंग्रेजी के information शब्द का हिंदी रूपांतरण मान सकते हैं जिसका अर्थ- जानकारी, खबर, इत्तला आदि होता है. किसी भी विषय के बारे में जानकारी देना ही सूचना है जिससे वह संबंधित हो और उससे व्यक्ति प्रभावित हो तो सोने पर सुहागा. मानक हिंदी कोश के अनुसार अवगत कराने या जताने के लिए कही हुई बात सूचना है. इसी के समानांतर नोटिस शब्द दिया गया है. इसे व्यापक अर्थ में जानकारी कह सकते हैं; किंतु जानकारी, ज्ञान के समक्ष है, और ज्ञान अंग्रेजी शब्द knowledge हिंदी रूपांतर है. इस तरह सूचना एवं ज्ञान में बुनियादी अंतर है. इतना तो अवश्य कहना होगा कि ये दोनों शब्द एक-दूसरे के पूरक हैं, एक दूसरे पर निर्भर हैं. क्या सूचना और ज्ञान शब्द समानार्थक हैं? इस प्रश्न पर विचार करने पर हम पाते हैं कि इन दोनों शब्दों का पृथक-पृथक अर्थ एवं संदर्भ है. सूचना टुकडों और खंडित शब्दों में आती है. और उसमें कई जानकारियों का संयोजन होता है. जबकि ज्ञान संरचनात्मक, सुसंगत और सार्वभौमिक होता है. सूचना समयबद्ध और रूपांतरणकारिणी होती है. इसके विपरीत ज्ञान का सार्वकालिक महत्त्व होता है. सूचना में संदेश का प्रवाह होता है जबकि ज्ञान का निर्माण प्रवाह के संचय के साथ होता है. सूचना का प्रवाह ज्ञान के प्रवाह को प्रभावित करता है. उसमें वृद्धि करता है. पुर्नशोधित करता है, परिवर्तन करता है. इन दोनों में अंतर है और प्रतिस्पर्धा भी है. सूचनाओं से जहाँ हमें अपने ज्ञान को निर्मित एवं निश्चित करने में सहायता प्राप्त होती है. किंतु ज्ञान के इस अर्जन में मनुष्य अपनी विवेक- क्षमता का भी अवलंब लेता है क्योंकि अपनी इसी विवेक क्षमता के आधार पर सूचना का विश्लेशण एवं दूसरों के ज्ञान का मूल्यांकन करना संभव हो पाता है. माना जीवन की इस अनिवार्यता(सूचना) से हमारा सामाजिक व्यक्तित्व निर्मित होता है, यह ज्ञान की आधार सामाग्री है. सूचना, ज्ञान और विवेकक्षमता से यहाँ समाज निर्मित होता है. जहाँ तक प्रौद्योगिकी शब्द का संबंध है, यह अंग्रेजी के Technology के समतुल्य प्रयुक्त होता है. प्रौद्योगिकी का a practice of applied science के रूप में परिभाषित किया जाता है. मैकग्रा- हिल डिक्शनरी ऑफ सांइटिफिक एंड टेक्नीकल टर्मस में भी टेक्नोलॉजी को इसी अर्थ में परिभाषित किया गया है. इस तरह प्रौद्योगिकी का संबंध अनुप्रयोग से है. यह अनुप्रयोग यंत्र- आधारित है. इस प्रकार प्रौद्योगिकी यांत्रिक सुविधाओं से संबंधित है, जो आधुनिकतम हैं. इन सुविधाओं के अंतर्गत कंप्यूटर, टेलीविजन, टेलीफोन, दूरसंचार उपग्रह, टेलीप्रिंटर आदि आधुनिकता की द्योतक प्रौद्योगिकी शामिल है. किसी काम को निष्पादित करने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली यह विशेष प्रौद्योगिकी भी इसमें समाहित है. जिससे कि उक्त काम को निश्चित तौर पर संपन्न किया जा सकता है. मैनफ्रेड कोशन ने तीन चरणों में प्रौद्योगिकी के प्रभाव की बात की है. पहला, हम जो अब कर रहे हैं, प्रौद्योगिकी उसे करने के योग्य बनाती है, लेकिन अपेक्षाकृत अधिक जल्दी और कम लागत पर. दूसरा, हम जो अब तक नहीं कर पाए हैं, उन्हें करने के योग्य बनाती है. और तीसरा यह जीवन- शैलियों में परिवर्तन लाती है. प्रौद्योगिकी में सभ्यता को शासित करने की सामर्थ्य एवं शक्ति है. मनुष्य अपने श्रम-साध्य कार्यों को सरल एवं अनुकूल बनाने के लिए उत्तरोत्तर नित- नूतन प्रौद्योगिकी हमारे दैनंदिन जीवन में संदर्भ का मुख्य आधार प्राप्त किए रहती है.

जनसंचार माध्यमों से संबंधित प्रौद्योगिकी की अभूतपूर्व प्रगति ने 'सूचना प्रौद्योगिकी' नामक एक पृथक क्षेत्र विकसित कर दिया है. माइक्रो- इलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्र में हुए अभूतपूर्व विकास एवं द्रुत प्रगति, पुरानी प्रौद्योगिकी की तेज़ी से पछाडती चल रही है. ऐसे में सूचना प्रौद्योगिकी में नएपन का विशेष महत्तव स्थापित हो जाता है. यही कारण है कि कई लोग 'सूचना प्रौद्योगिकी' शब्द को 'नई प्रौद्योगिकी' के पर्याय के रूप में प्रयुक्त करते हैं. उनका मानना है कि यह विभिन्न प्रकार की सूचना के सृजन, भंडारण, चयन, हस्तांतरण और वितरण के अनुप्रयोग पर लागू की जाने वाली नई प्रौद्योगिकी है. जबकि वास्तविकता यह है कि सूचना प्रौद्योगिकी की अवधारणा का द्योतक यह विचार, निहित संकल्पना की समग्रता का प्रतिनिधित्व नहीं करता है. सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित संक्षिप्त विश्वकोष में 'सूचना प्रौद्योगिकी' को सूचना से सम्बद्ध माना गया है. इस प्रकार के विचार डिक्शनरी ऑफ कंप्यूटिंग में भी व्यक्त किए गये हैं. मैकमिलन डिक्शनरी ऑफ इनफोर्मेशन टेक्नोलॉजी में 'सूचना प्रौद्योगिकी' को परिभाषित करते हुए यह विचार व्यक्त किया गया है. कि यह कंम्प्यूटिंग और दूरसंचार के सम्मिश्रण पर आधारित माइक्रो- इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा मौखिक चित्रात्मक, मूल-पाठ विषयक और संख्या संबंधी सूचना का अर्जन, संसाधन, भंडारण और प्रसार है. सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी इस परिभाषा से ज्ञात होता है कि सूचना प्रौद्योगिकी का संबंध केवल सूचना के सम्प्रेषण से नहीं है अपितु उसे सूत्रबद्ध करने, दर्ज करने और संसाधित करने से भी है. साथ ही इस परिभाषा से यह भी पता चलता है कि सूचना प्रौद्योगिकी का संबंध केवल सूचना के विभिन्न प्रकार से संबंधित है और इसके अंतर्गत केवल मूल पाठ विषयक अथवा शाब्दिक प्रस्तुतीकरण ही नहीं अपितु संख्या संबंधी दृश्या और श्रव्य प्रस्तुतीकरण भी शामिल है. अमेरिका रिपोर्ट के अनुसार सूचना प्रौद्योगिकी को इन शब्दों में परिभाषित किया गया है- सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ है- सूचना का एकत्रीकरण, भंडारण, प्रोसेसिंग, प्रसार और प्रयोग. यह केवल हार्डवेयर अथवा सॉफ्टवेयर तक ही सीमित नहीं है बल्कि इस प्रौद्योगिकी के लिए मनुष्य की महत्ता और उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करना, इन विकल्पों के निर्माण में निहित मूल्य, यह

निर्णय लेने के लिए प्रयुक्त मानदंड है कि क्या मानव इस प्रौद्योगिकी को नियंत्रित कर रहा है और इससे उनका ज्ञान संवर्द्धन हो रहा है. यूनेस्को के अनुसार सूचना प्रौद्योगिकी की परिभाषा इस प्रकार है- सूचना प्रौद्योगिकी वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय और इंजिनियरिंग विषय हैं और सूचना की प्रोसेसिंग, उनके अनुप्रयोग की प्रबंध तकनीकें हैं, कंप्यूटर और उनकी मानव तथा मशीन के साथ अंत:क्रिया एवं संबद्ध सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विशय. प्रौद्योगिकी में तीन शब्दों का समावेश है- कंप्यूटर, माइक्रो- इलेक्ट्रानिकल और संचार.

अन्य शब्दों में सूचना प्रौद्योगिकी सूचना प्रबंध को नए इलैक्ट्रानिक आयाम उपलब्ध कराने के लिए प्रौद्योगिकियों का समूह (मोजेक) उत्पाद और तकनीकें एक साथ मिलाकर सामने आए हैं. यह समूह, सूचना प्रौद्योगिकी के नाम से जाना जाता है. इसमें सूचना विज्ञान पद्धति सिद्धांत, कंप्यूटिंग माइक्रो- इलेक्ट्रानिक्स, दूर संचार, श्रमदक्षता-शास्त्र (erogonomics) व्यवहारात्मक विज्ञान, संगठन और पद्धति तकनीकें शामिल हैं. डॉ. जगदीश्वर चतुर्वेदी ने सूचना प्रौद्योगिकी के लिए 'सूचना तकनीकी' शब्द को व्यवहत किया है. और इसे परिभाषित करते हुए लिखा है- 'सूचना तकनीकी(प्रौद्योगिकी) का किसी भी उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया जाए वह वस्तुत: उपकरण तकनीक है. यह सूचनाओं को अमूर्त संसाधन के रूप में मथती है. यह हार्डवेअर और 'सॉफ्टवेयर' दोनों पर आश्रित हैं. इसमें उन तत्वों का समावेश भी हैं जो हार्डवेअर और 'सॉफ्टावेयर' से स्वतंत्र है. डॉ. जबरीमल्ल पारख ने अपनी पुस्तक 'जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य' सूचना और सूचना प्रौद्योगिकी' शीर्षक अध्याय में सूचना प्रौद्योगिकी को परिभाषित करते हुए लिखा है कि- 'सूचना प्रौद्योगिकी का तात्पर्य उस प्रौद्योगिकी से है जिसके द्वारा सूचना का उत्पादन, प्रसंस्करण वितरण, पुनरुत्पादन और परावर्तन से जोडा है. उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी को परिभाषित करने के साथ-साथ इसे संचार प्रौद्योगिकी से जोडकर भी देखा है और लिखा है- 'संचार प्रौद्योगिकी वह प्रौद्योगिकी है जिसका संबंध संचार की प्रक्रियाओं से है. संचार की प्रक्रियाओं में संचार उत्पादों का निर्माण, प्रसंस्करण, पुनरुत्पादन और परावर्तन शामिल है.''

सूचना प्रौद्योगिकी के घटक- सूचना प्रौद्योगिकी के दो प्रमुख घटक हैं- सूचना और टैक्नोलॉजी, लेकिन भारत के संदर्भ में इसका तीसरा घटक भी है- भाषा. जिन देशों की मातृभाषा अंग्रेजी है उनके लिए भाषा का घटक महत्तवपूर्ण नहीं. लेकिन भारत जैसे देश में जहाँ अंग्रेजी समझने समझने वालों की संख्या केवल 5 प्रतिशत है और जहाँ कम से कम 22 प्रमुख मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं, भाषा का घटक कई दृष्टियों से बहुत महत्तवपूर्ण हो जाता है. ऐसे विशाल समुदाय के लिए उन्हीं की भाषा में सूचना उपलब्ध कराना अपने में एक काफी बडा दायित्व है. नीचे हम सूचना टैक्नोलॉजी के इन तीनों घटकों पर विचार करेंगे. (क) सूचना- यहाँ सूचना से तात्पर्य उस कथ्य सा सामग्री से है जो हमें इंटरनेट या वैब के माध्यम से प्राप्त होती है. मोटे रूप से इंटरनेट से उपलब्ध सूचनाएं प्राय: तात्कालिक महत्व की होती हैं, जैसे व्यापारिक, वाणिज्यिक, सूचनां. ज्ञानात्मक सूचनाओं का संबंध ज्ञान- विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों या अनुशासनों से होता है. ज्ञानात्मक सूचनाएं अधिक स्थायी प्रकृति की होती हैं और उनका उपयोग प्राय: संदर्भ ग्रंथ की तरह होता है, जैसे ज्ञान-विज्ञान संबंधी जानकारी, शब्दकोष, विश्वकोष, थिसॉरस, साहित्य, संस्कृति, इतिहास, भूगोल आदि. स्थायित्व की दृष्टि से भी सूचनाएं दो प्रकार की होती हैं- स्थिर (स्टेटिक) और परिवर्तनशील (डाइनेमिक). स्थिर सूचनाएं काफी समय तक इंटरनेट में उसी रूप में बनी रहती हैं क्योंकि उनमें बार-बार परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं पडती या बहुत कम पडती है, जैसे साहित्य, ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, विश्वकोष, शब्दकोष आदि से संबंधित जानकारी. परिवर्तनशील सूचनाएं वे हैं जिन्हें हर कुछ मिनटों, घंटों, दिनों या महीनों में अद्यतन करते रहने की ज़रूरत पडती है, जैसे समाचार, विमान आगमन-प्रस्थान संबंधी सूचना, खेल कमेंट्री, क्रय-विक्रय संबंधी सूचना, पदों का विज्ञापन, संस्थाओं की गतिविधियों का विवरण आदि. (ख) टैक्नोलॉजी- इंटरनेट के संदर्भ में टैक्नोलॉजी से तात्पर्य उन तकनीकी उपकरणों से है जो दृष्य- श्रव्य रूप में सूचना को एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचाने के माध्यम होते हैं. इनमें कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोडम, स्कैनर, वीडियो कैमरा, साउंड कार्ड, टैलिफोन, प्रिंटर सर्वर, सैटेलाइट आदि शामिल हैं. आज इस टैक्नोलॉजी में बहुत तेज़ी से विकास हो रहा है और दो से अधिक टैक्नोलॉजी युक्तिओं को जोडकर एक करने का प्रयास किया जा रहा है जिसके फलस्वरूप कई नई सुविधाएं उपलब्ध हो सकती हैं. उदाहरण के लिए- इंटरनेट को सीधे टीवी के पर्दे पर देखना संभव है, मोबाइल के भीतर ही इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है और वायरलैस टैक्नोलॉजी से केबल के बिना भी इंटरनेट चलाना संभव है

(ग) भाषा- भाषा सूचना प्रौद्योगिकी का मुखपृष्ठ है जिसकी सहायता से प्रयोक्ता पर्दे पर अंकित सूचना को ग्रहण करता है. यदि इस सूचना की भाषा को ही प्रयोक्ता न समझ सके, तो इस टैक्नोलॉजी का उसे कोई फायदा नहीं. आज इंटरनेट की 83 प्रतिशत सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध है इसीलिए अंग्रेजी भाषा-भाषी देशों में भाषा कोई समस्या नहीं है. यह समस्या उन देशों की है, जहाँ भाषा समाज अंग्रेजी नहीं जानता है और अपनी अपनी स्थानीय भाषाओं का ही इस्तेमाल करता है. सूचना प्रौद्योगिकी को प्राय: सामाजिक विकास और जन-कल्याण के उद्देश्यों के साथ जोडा जाता है, इसलिए भारत के संदर्भ में यह आवश्यक है कि इंटरनेट की कथ्य सामग्री लोगों तक भारतीय भाषाओं में दो माध्यम से पहुँचे. इस संबंध में दो समाधानों का प्राय: उल्लेख किया जाता है- भाषा का स्थानीकरण और टैक्नोलॉजी का विस्तारीकरण.

हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी:-

सूचना प्रौद्योगिकी की विश्व क्रांति में अब हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध हैं. हिंदी का प्रयोग आज इंटरनेट और ईमेल में संभव हो गया है तथा हिंदी में अनेक पोर्टल भी प्रारम्भ हो गए हैं. पोर्टल के माध्यम से देश-विदेश की खबरें, वर्गीकृत, विज्ञापन, कारोबार संबंधी सूचनाएं, शेयर बाज़ार, शिक्षा मौसम, खेलकूद, पर्यटन, साहित्य, संस्कृति धर्म, दर्शन आदि के बारे में ताज़ा जानकारी प्राप्त की जा सकती है. पोर्टलमें हिंदी ई-मेल की सुविधा भी उपलब्ध है. अनेक सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं में हिंदी पोर्टल के

अतिरिक्त द्विभाषी और बहुभाषी पोर्टल भी हैं. वेबसाइट का श्रीगणेशा हो चुका है. यह सही है कि इस समय हिंदी सॉफ्टवेयर अंग्रेजी सॉफ्टवेयर की अपेक्षा बहुत कम हैं. तथापि, यह प्रयास जारी है कि हिंदी और भारतीय भाषाओं में सॉफ्टवेयर निर्मित किए जाएं. कृत्रिम बुद्धि (Artificial Intelligence) सूचना प्रौद्योगिकी का आवश्यक गुण है. कुछ विद्वानों का कथन है कि कंप्यूटर की जो सोच है, वह संस्कृत भाषा के निकट है और इसका उल्लेख भगवान शंकर के तांडव नृत्य के साथ भी किया गया है. वास्तव में कंप्यूटर सब कुछ कर सकता है. बस हमें उसकी स्मृति क्षमता तथा संसाधन क्षमता की जानकारी हो.

कंप्यूटर के विकास का प्रारंभ 1940 के दशक में हुआ था, किंतु उसकी प्रेरणा के बीज सन 1935 के पास चार्ल्स वेबेज़ द्वारा बनाए गए 'नाटिकल एंजिन' में मिलते हैं. जिसकी कार्य प्रणाली बहुत कुछ आधुनिक कंप्यूटर जैसी ही थी. 1944 में हावर्ड विश्वविद्यालय द्वारा आईबीएम और यूएनवी' के सहयोग से मार्क- नामक यंत्र का निर्माण हुआ. 1946 में कंप्यूटर युग का सूत्रपात हुआ और वह 1955 से 1965 तक गति और कार्यक्षमता की दृष्टि से विकसित हुआ और उसमें नए आयाम भी सम्मिलित होते गए. 1971-72 में भारतीय वैज्ञानिकों के प्रयास से एक सरल कुँजी पटल और उसकी प्रणाली का विकास हुआ. 1978 में सभी भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त हो सकने वाला पहला 'फोटोटाइप टर्मिनल' तैयार हुआ जिससे कंप्यूटर पर देवनागरी लिपि तथा अन्य भारतीय लिप्यों के उपयोग में तेज़ी आई. अस्सी के दशक में शब्द संसाधन की दृष्टि से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में मुद्रण के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति आई. आज सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों में अनेक संस्थाएं हिंदी सॉफ्टवेयर के निर्माण में सक्रिय हैं. पहले हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए उपयुक्त कुँजी पटल का विकास हार्डवेयर संबंधी सबसे प्रारंभिक चुनौती थी. प्रारंभ में यांत्रिक टाइपराइटरों के मॉडल पर ही देवनागरी के कुँजी पटल का विकास किया गया जो आज भी प्रयोग में है. ये कुँजी पटल हर भाषा के लिए अलग- अलग विकसित किए जाते हैं. इस बीच सभी भारतीय भाषाओं की लिपियों के लिए एक समंवित कोड विकसित करने की दिशा में विषेषज्ञों ने प्रयास करना शुरु किया, जिससे एक ही पटल में अधिक से अधिक लिपियों का टंकण संभव हो सके. इस प्रयास में भारत सरकार के तत्कालीन इलैक्ट्रानिक विभाग, आईआईटी कानपुर और सी डैक की भूमिका प्रमुख थी. भारत की सभी लिपियों (उर्दू को छोडकर) का मूल ब्राह्मी लिपि है और सभी भारतीय भाषाओं की वर्णमालाएं लगभग समान हैं, जो हमें संस्कृत से विरासत में मिली हैं. इस वर्णमाला की विशेषता यह है कि यह ध्वनि आधारित है और वर्णमाला में वर्णों का वितरण उनके उच्चारण स्थलों के क्रम से है (जैसे- कंठ्य ध्वनि, क ख ग घ ङ एक क्रम में आते हैं.). इस सूत्र को आधार मानकर ध्वनियों के आधार पर 11 भारतीय भाषाओं के लिए एक ऐसा समंवित कोड विकसित किया गया जिससे एक ही कुँजी से इन सभी भाषाओं से समान ध्वनिवाले अक्षर टंकित हो जाते हैं. इसमें आधार पर जो कोड विकसित किया गया, वह इस्की कोड (Indian Standard Code for Information Interchange) कहलाता है और कुँजी पटल को ध्वन्यात्मक कुँजी पटल (फोनेटिक की बोर्ड) कहते हैं. इस समय यह कोडिंग प्रणाली सी-डैक के जिस्ट (GIST), लीप (LEAP), इज़्म (ISM), आदि अनेक सॉफ्टवेयरों में उपलब्ध है. इस कोडिंग प्रणाली का एक लाभ यह है कि इसमें 11 भारतीय भाषाओं के बीच परस्पर लिप्यांतरण भी संभव है, जिसमें अंग्रेजी भी शामिल है. आज कंप्यूटर के अधिकांश कुँजी पटलों में तीन विकल्प उपलब्ध हैं. जो प्रयोक्ता रेमिंगटन आदि यांत्रिक टाइपराइटरों पर टाइप करने में अभ्यस्त हैं, वे रेमिंगटन विकल्प का चयन कर सकते हैं और रेमिंगटन के कुँजी पटल की तरह टंकण कर सकते हैं. इंस्क्रिप्ट विकल्प का चयन करने पर यही कुँजी पटल देवनागरी वर्णमाला पर आधारित ध्वन्यात्मक कुँजी पटल में परिणत हो जाता है. इस कुँजी पटल पर टैप करना अधिक आसान होता है है क्योंकि इसकी कुँजियाँ वर्णमाला के क्रम व्यवस्थित की गई हैं जो हमारे मस्तिश्क में संस्कारवश पहले से स्पष्ट रहता है. एक्जिक्यूटिव विकल्प का चयन करने पर हिंदी शब्दों और वाक्यों को अंग्रेजी में ही रोमन लिपि में टंकित किया जा सकता है, जो पर्दे पर अपने आप देवनागरी में परिणत होता जाता है.यह विकल्प उन लोगों के लिए विशेष उपयोगी है जो देवनागरी लिपि नहीं जानते या जो देवनागरी कुँजी पटल पर टाइप करने के अभ्यस्त नहीं हैं. एक बार कुँजी पटल विकसित हो जाने के बाद उस पर कार्य करने के लिए अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर और उपयोगिता की जरूरत पडती है, जैसे हिंदी सॉफ्टवेयर स्पेल चेकर, ऑनलाइन शब्दकोश, सॉर्टिंग सुविधा, मेल मर्ज सुविधा आदि. आज कंप्यूटर पर अधिकांश कार्य विंडोज् पर होता है और डॉस पर बहुत कम. अत: विंडोज प्लेटफार्म में काम करने वाले अनेक हिंदी सॉफ्टवेयर मार्केट में उपल्ब्ध हैं, जैसे- लीप ऑफिस, इज़्म ऑफिस, सुविंडोज, अक्षर फॉर विंडोज और आकृति ऑफिस आदि. इंटर्नेट में ईमेल और वैबपेज में इस्तेमाल के लिए भी देवनागरी में विशेष फांट भी उपलब्ध हैं, जैसे- आईलीप और सुविंडोज 20. इस्में अब डाइनेमिक फाण्ट भी उपलब्ध हो रहे हैं जिसमें इंटर्नेट में खोली गयी हिंदी सामग्री को पढकर इसी लिपि में उत्तर भी दिया जा सकता है. एक अन्य क्षेत्र जिस और कुछ संस्थाएँ कार्यरत हैं, वह हैं कंप्यूटर के समस्त परिवेश को हिंदी में उपलब्ध कराना, जिसके फलस्वरूप कंप्यूटर के पर्दे पर दिखाई देने वाले कमान, संदेश त्रुटि संकेत आदि. सभी हिंदी (या भारतीय भाषाओं) में उपलब्ध होंगे.

भाषा शिक्षण की दिशा में भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने सी डेक पुणे से सहयोग से लीला हिंदी प्रबोध नामक सॉफ्टवेयर तैयार किया. इस सॉफ्टवेयर से पाठों में आए वाक्यों शब्दों और वर्णों का मानक उच्चारण प्रशिक्षार्थी सुन सकता है. लीला पैकेज(लर्न इंडियन लैंग्वेज थ्रु आर्टिफिशियल इंटेलीजैंस) के द्वारा सभी भारतीय भाषाओं को देवनागरी के माध्यम से सीखने की सुविधा उपलब्ध है. हिंदी शिक्षण की दृष्टि से मैजिक सॉफ्टवेयर प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली द्वारा निर्मित मल्टीमीडिया सीडी रोम गुरु भी महत्वपूर्ण है. इंटरनेट के फलक पर वेब दुनिया डॉट कॉम (इंडिया) लि. ने इंटरनेट पर हिंदी की क्षमता के दर्शन हुए. वेब दुनिया के इस कार्यक्रम में मेल, चैट, खोज आदि भी सम्मिलित हो रहे हैं. सॉफ्टवेयर कंपनी इंफार्मेशन सिस्टम, इंदौर ने हिंदी में नि:शुल्क ईमेल का श्रीगणेश कर दिया है. इस पैकेज में लिप्यतंरण की सुविधा भी प्राप्त है. रोमन में टाइप पत्र दूसरे सिरे पर देवनागरी में प्राप्त हो सकता है. सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय और वैज्ञानिक तथा

तकनीकी शब्दावली आयोग ने संयुक्त रूप से हिंदी शब्दावली का इंटरनेट तैयार किया है, जिसमें तकनीकी शब्दों के वैकल्पिक हिंदी पर्यायों का वेबसाइट पर शून्य संस्करण तैयार किया गया है. यह वास्तव में दस हज़ार तकनीकी शब्दों की काम्पेक्ट डिस्क है. मानव संसाधन विकास, मंत्रालय तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा और भारतीय इलैक्ट्रानिकी अनुसंधान तथा विकास केंद्र नोएडा को नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा प्रकाशित हिंदी विश्वकोश को इंटरनेट पर प्रस्तुत करने का कार्य सौंपा है. हिंदी विश्वकोश के बारह खंडों मेंसे दस खंड लगभग तैयार हो चुके हैं. इसमें इंटरनेट की सुविधा के अनुसार विषयों का वर्गीकरण तथा सरल मार्ग निर्देशित अभिगम होगा जो मल्टीमीडिया की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य करेगा. इसी के साथ- साथ हिंदी कारपोस (विपुल शब्द संग्रह) अंग्रेजी- हिंदी कोश को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लाने का प्रयास किया जा रहा है. इस प्रकार प्रौद्योगिकी की विशाल संभावनाएं उभर कर आ रही हैं. यह सही है कि कंप्यूटर या सूचना प्रौद्योगिकी के नए आविष्कारों में हिंदी का प्रयोग देर से प्रारम्भ हो रहा है, इससे हमें कभी-कभी पिछडने का अहसास होता है. परंतु यह अहसास मिथ्या है, क्योंकि कोई भी प्रौद्योगिकी प्रारम्भ प्रायोगिक स्थिति में होती है और उसमें अनुसंधान और विकास निरंतर होता रहता है. अत: उन्नत स्तर की प्रौद्योगिकी के साथ- साथ आज हिंदी के जुडने की सुविधाएं उपलब्ध होना और इन सबसे इनका लाभ उठाना अंततोत्गत्वा हमारा , आपका हम सबका उत्तरदायित्व है. हिंदी भाषा-भाषी अपनी अज्ञानता, निराशा, हीनता को त्यागकर हिंदी के हित में सच्चे मन से कार्यरत रहे तो वो समय दूर नहीं जब हिंदी विश्व पटल पर प्रथम भाषा बन सिरमौर बनेगी. इति शुभम.

संदर्भ:- 1. सूचना प्रौद्योगिकी- प्रो.हरिमोहन, सूचना प्रौद्योगिकी और जन माध्यम, तक्षशिला प्रकाशन 2. भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी का विकास और हिंदी- डॉ. ओम विकास, भाषा पत्रिका, मई-जून, 2002, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली. 3. सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी- प्रो. सूरजभान सिंह, अनुशीलन पत्रिका, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान एवं केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली. 4. सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम,2000. 5. सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम,2000, उद्देश्य एवं उपयोगिता, श्रीमती संतोष खन्ना, महिला विधि भारती, नई दिल्ली-110085, अंक-32. 6. राजभाषा हिंदी का प्रयोग- प्रसार और सूचना प्रौद्योगिकी- सुश्री पूनम जुनेजा. 7. प्रौद्योगिकी वैश्वीकरण और हिंदी- डॉ. ओम विकास 8. New Information Technology in Education, D. Hawkridge, Croon Helm, London,1985 9. The Study of Information: Interdisciplinary Messages, F. Maclap and Mensfield, John Wille, New York, 1983.